National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 23-04-2023, Accepted: 24-05-2023, Published: 05-06-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 51-54

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सैद्धान्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, डी.बी.एस. कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक व सामाजिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ०प्र० द्वारा सचालित स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकोंका चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुतशोध में केवल कानपुर मण्डल के स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। शोध चर सैद्धान्तिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यों व्यावसायिक मूल्य के मापन हेतु डा०हरभजन सिंह एंव एस० पी अहलूवालियाद्वारा निर्मित Teacher Values Inventory (TVI) परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन में पाया गया कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य समान पाए गये जबकि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में अन्तर पाया गया। महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का स्तर पुरूष शिक्षकों से उच्च है।

मूल शब्दः स्ववित्तपोषित माध्यमिक विघालय, सैद्धान्तिक, सामाजिक मूल्य

प्राक्कथन

शिक्षा का अर्थ मात्र विद्यालय में पढ़ करके परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री प्राप्त करना नहीं है। बल्कि यह जीवन के हर पहलू में ज्ञान, कौशल और अनुभव को प्राप्त करने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के विकास का आधार है और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा से व्यक्ति की सोचने की क्षमता, समझने की शक्ति और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है। शिक्षा के विभिन्न प्रकार होते हैं जैसे – औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और निरौपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्राप्त की जाती है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा का अर्थ जीवन के अनुभवों से सीखना है जबकि निरौपचारिक शिक्षा सीखने वाले की आवश्यकता व परिस्थिति के अनुसार लचीली होती है।

शिक्षा केवल ज्ञान का संचय नहीं है, बल्कि यह नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी विकास करती है। यह हमें अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों का अहसास कराती है, और एक जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करती है। शिक्षा के माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों, दृष्टिकोणों और विचारों को समझते हैं, जो हमें सहिष्णुता और सह–अस्तित्व की भावना प्रदान करती है। शिक्षक, इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि छात्रों को प्रेरित करते हैं और उनके विकास में सहायता करते हैं। एक अच्छे शिक्षक की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव और छात्रों के प्रति उसकी संवेदनशीलता से होती है। वे छात्रों के मन में जिज्ञासा जगाते हैं और उन्हें सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम को पढ़ाना नहीं है, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है। वे छात्रों को समस्याओं का समाधान करने, विचार करने और टीम में काम करने की क्षमता विकसित करने में मदद करते हैं। इसके अलावा वे छात्रों को आत्म–विश्वास और नेतृत्व कौशल भी सिखाते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा और शिक्षक दोनों ही चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। तकनीकी प्रगति के साथ, शिक्षा के तरीके भी बदल रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का विकास शिक्षकों के लिए एक नया अवसर प्रस्तुत करता है। लेकिन इसके साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं जैसे कि छात्रों की संलग्नता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता।

संक्षेप में, शिक्षा और शिक्षक का संबंध बेहद महत्वपूर्ण है। शिक्षा हमें सिखाती है कि कैसे जीना है, जबकि शिक्षक हमारा मार्गदर्शन करते हैं। एक समर्पित शिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है और छात्रों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। इसलिए हमें अपने शिक्षकों का सम्मान करना चाहिए और उनके योगदान को समझना चाहिए क्योंकि वे हमारे भविष्य के निर्माता हैं।

शिक्षकों के सैद्धांतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों का विषय शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसारक नहीं होते, बल्कि वे अपने छात्रों के लिए एक आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं। उनके आचार–व्यवहार, विचारधारा और मूल्यों का छात्रों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

''सैद्धांतिक मूल्य'': शिक्षकों को अपने शिक्षण में स्पष्ट और मजबूत सैद्धांतिक आधार होना चाहिए। यह मूल्य छात्रों को तर्कशक्ति, आलोचनात्मक सोच और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में मदद करते हैं। एक शिक्षक को न केवल विषयवस्तु का ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उसे यह भी समझना चाहिए कि ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाए और किस प्रकार से यह समाज और व्यक्ति के लिए लाभकारी हो सकता है।

''सामाजिक मूल्य'': शिक्षक समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। वे छात्रों को सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहयोग की भावना से जोड़ते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि समाज के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी भी है। शिक्षक छात्रों को विविधता का सम्मान करना, सहिष्णुता और समानता के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

''संक्षेप में'', शिक्षक केवल ज्ञान के वितरक नहीं होते, बल्कि वे सैद्धांतिक एवं सामाजिक और मूल्यों के संवर्धक भी होते हैं। उनके द्वारा दिए गए मूल्य शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को आकार देते हैं और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करते हैं। इसलिए, शिक्षकों का मूल्यांकन केवल उनकी शैक्षणिक योग्यताओं से नहीं, बल्कि उनके नैतिक और सामाजिक योगदान से भी किया जाना चाहिए।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की किशोरावस्था की आयु तथा वर्तमान भारतीय परिस्थितियों को देखते हुये उनमें नैतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों का विकास करना अति आवश्यक है। आज के युवा जीवन में आने बाली छोटी–छोटी समस्याओं से धबराकर आत्महत्या जैसा घातक कदम तक उठा लेते है। आज हम अक्सर समाचारों में सुनते हैं कि ऑनलाइन गेमिंग में हार जाने, प्रेम संबंधों में असफल हो जाने पर या मित्रों में हुए मामूली झगड़े के कारण आत्महत्या कर लेते हैं। शिक्षक अपने विषय में कितना भी पारंगत क्यों न हो यदि उसमें नैतिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक मूल्यों का अभाव है तो निश्चित रूप से वह एक सफल शिक्षक नहीं हो सकता है। एक सफल शिक्षक वह ही है जो अपने विद्यार्थियों को समस्याओं से लड़ने योग्य बनाता है व उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक गुणों का विकास भी करता है।

21वीं शताब्दी में जहाँ छात्रों में ढ़ेरों अवगुण उत्पन्न हो रहे है, मूल्यों का ह्रास हो रहा है, स्वार्थ प्रवृत्ति चरम पर है। वहाँ ऐसे शिक्षकों की अत्यधिक आवश्यकता है जो छात्रों के अवगुणों को दूर कर मूल्यो को विकसित कर उन्हें एक योग्य व कुशल नागरिक बना सकें।

अतः वर्तमान भारतीय समाज व शिक्षा की बदलती परिस्थितियों को देखते हुए शोधकर्ता को स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सैद्धान्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करने की आवश्यकता उत्पन्न हुयी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाशास्त्रियों व समाज के लिए लाभप्रद सिद्व होगें।

साहित्यावलोकन

1. पुनिया (2000) ने विश्वविद्यालयी शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों अध्ययन किया। शोधकर्ता ने हरियाणा राज्य के 130 विश्वविद्यालयी शिक्षकों को न्यादर्श के रुप चयनित किया। शोधकर्ता द्वारा व्यावसायिक मूल्यों के मापन हेतु स्वनिर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन में विभिन्न आयु वर्ग के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन में पाया गया कि युवा शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों का स्तर अधिक आयु वर्ग के शिक्षकों से अधिक पाया गया।
2. शर्मा, अजय (2001) ने माध्यमिक तथा डिग्री कॉलेजों के शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा 50 माध्यमिक शिक्षकों तथा 50 डिग्री कॉलेज के शिक्षकों कुल 100 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि के द्वारा किया गया। अध्ययन का निष्कर्ष यह रहा कि डिग्री कॉलेज के शिक्षकों की सैद्धांतिक मूल्यों मूल्यों का स्तर माध्यमिक शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों से अधिक था।
3. Iiangovan V. (2003) ने स्नातक स्तरीय शिक्षकों के सैद्धांतिक मूल्यों तथा विषयगत दक्षता के बीच का संबंध का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में दक्षिण भारत के चार प्रदेशों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के 239 स्नातक स्तरीय शिक्षकों तथा 1561 छात्रों का उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करते हुए चयन किया।
4. अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित रहे –

1. शिक्षकों की व्यवसायिक मूल्यों का उनकी अंग्रेजी विषय के प्रति दक्षता में सार्थक का सहसंबंध पाया गया।
2. शिक्षकों व्यवसायिक मूल्यों का छात्रों के शैक्षिक सम्प्राप्ति के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया।

5. Doren Ajao (2004) ने चेन्नई जिले के विशेष विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक अनुभव से सम्बन्ध का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में 108 शिक्षकों तथा 142 शिक्षिकाओं को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से चयनित किया। अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित रहे –

1. विशेष विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।
2. मान्यता प्राप्त तथा गैर मान्यता प्राप्त विशेष विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।
3. विशेष विद्यालयों में कार्यरत व्यावसायिक दक्षता प्राप्त तथा व्यावसायिक दक्षता रहित प्राप्त का स्वागत शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में अंतर पाया गया।
4. विशेष विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यवसायिक मूल्यों तथा शिक्षण अनुभव में सार्थक अंतर पाया गया।
5. Elliott And Crosswell (2004) ने माध्यमिक विघालयों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा आस्ट्रेलिया के 650 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि के द्वारा किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षकों के सामाजिक मूल्य छात्रों की व्यक्तिगत तथा भावनात्मक समस्याओं को सुलझाने तथा स्वयं के व्यावसायिक क्षमताओं के विकास महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

6. Day *et.al* (2005) ने माध्यमिक शिक्षकों की सामाजिक मूल्यों का उनके विद्यालयी क्रियाकलापों में हस्तक्षेप के स्तर से संबंध का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा 450 माध्यमिक शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि जो शिक्षक विद्यालयी क्रियाकलापों में व्यक्तिगत रूचि लेते हैं उनके सामाजिक मूल्यों का स्तर भी उच्च रहता है।
7. गुप्ता व नेन (2013) ने शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत बी.एड. शिक्षकों के व्यवसायिक मूल्यों का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में हरियाणा राज्य के 200 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया। अध्ययन में पाया गया कि –

1. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में कार्यरत बी.एड. शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।
2. पुरुष तथा महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

8. शर्मा, प्रणव (2013) ने सरकारी व स्ववित्तपोषित शिक्षक–शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों की मूल्यों का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति तथा कार्य संतुष्टि से सहसबंध का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श के रूप में हरियाणा राज्य की सरकारी शिक्षक–शिक्षा संस्थानों से 90 शिक्षकों (27 पुरुष व 63 महिला) तथा स्ववित्तपोषित शिक्षक–शिक्षा संस्थानों से 90 शिक्षकों (23 पुरुष व 67 महिला) का चयन किया गया।
9. मलिक, चरन एवं प्रसन्ता (2021) ने उडीसा के कटक जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता, स्थानीयता और जेन्डर के संबंध में मूल्य शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर किए गए अध्ययन में पाया कि मूल्य शिक्षा पर पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया है। इसी तरह, मूल्य शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण में ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है।

शोध शीर्षक के अंतर्गत आए पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएं

- **माध्यमिक शिक्षक**

  माध्यमिक शिक्षकों से अर्थ कक्षा–9 से कक्षा–12 तक के छात्रों को पढ़ाने वाले शिक्षकों से है।

- **स्ववित्तपोषित /निजी माध्यमिक विघालय**
  स्ववित्तपोषित या निजी माध्यमिक विद्यालयों से अर्थ उन विद्यालयों से है जो विघालयी खर्च हेतु सरकार से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं करते।

- **चर**

सैद्धान्तिक मूल्य – सैदांतिक मूल्य वे आदर्श और नैतिक सिद्धांत होते हैं, जो समाज या संस्कृति की स्थायी धारा के रूप में समय–समय पर निर्धारित होते हैं। ये मूल्य परंपराओं, धर्म, और संस्कृतियों से उत्पन्न होते हैं और व्यक्ति के व्यवहार को मार्गदर्शित करते हैं। सैदांतिक मूल्य समाज के उच्चतम आदर्शों को व्यक्त करते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी इनका पालन किया जाता है।

सामाजिक मूल्य – सामाजिक मूल्य वे नैतिक सिद्धांत हैं, जो समाज में अच्छे और जिम्मेदार नागरिकों के रूप में जीवन जीने की दिशा देते हैं। सामाजिक मूल्य व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि ये सामाजिक समरसता और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं, जिससे समाज में एकजुटता और सद्भाव बना रहता है।

1. **धार्मिक मूल्य** – धार्मिक मूल्य वह नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांत होते हैं, जो किसी धर्म के अनुयायी को अच्छे आचरण, जीवन के उद्देश्य, और समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। इन मूल्यों में सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, सहनशीलता, और सदाचार जैसे गुण शामिल होते हैं।

- **जनसंख्या** – प्रस्तुत शोध कार्य में कानपुर मण्डल में स्थित समस्त स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय तथा उनमें कार्यरत शिक्षकों को समष्टि के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।
- **न्यादर्श**

तलिका 1: चयनित प्रतिदर्श तालिका

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय	पुरूष शिक्षक	महिला शिक्षक	कुल योग
शिक्षक	100	100	200

- **शोध विधि** – प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है
- **उपकरण** – स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों के मापन हेतु डा0 हरभजन सिंह एंव डा0 एस0 पी अहलूवालिया द्वारा निर्मित TEACHERS VALUES INVENTERY (TVI-SA) का उपयोग किया गया है।
- **अध्ययन के उद्देश्य**

1. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

- **अध्ययन की परिकल्पना**

1. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण – 1

उद्देश्य 1: स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना 1: "स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" परिकल्पना का सत्यापन क्रान्तिक अनुपात के द्वारा किया गया है, विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–4. 7 में दिया गया है।

तालिका संख्या 2

शिक्षक/ शिक्षिकांए	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	91.28	11.950	.247	असार्थक	स्वीकृत
शिक्षिकांए	100	90.88	10.958			

शिक्षक – शिक्षिकाओं के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्यमान का दण्ड आरेख

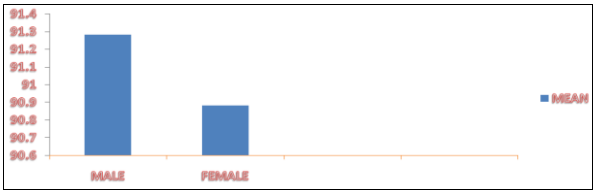

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में शिक्षक मूल्य मापनी परप्राप्त 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 91.28 व 90. 88 मानक विचलन 11.950 तथा 10.958 तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 198 स्वतन्त्रता स्तर पर .247 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से कम है।

परिणाम की व्याख्या

अतः माध्यों के बीच अन्तर सार्थक नहीं है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना "स्ववित्तपोषित विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है। अतः पुरूष व महिला शिक्षकोंके सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। जो भी अन्तर दृष्टिगत हो रहा है वह निरर्थक है।

परिणाम की विवेचना

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि स्ववित्तपोषित विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्योंमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि उनके व्यवसाय में प्रवेश हेतु निर्धारित पात्रता सभी अभ्यर्थियों के लिए एक समान होती है। एक ही व्यवसाय में कार्य करने बाले व्यक्तियों की व्यावसायिक परिस्थितियॉ भी लगभग समान होती हैं और समान परिस्थितियों में कार्य करने के कारण उनकी सैद्धान्तिक विचारधारा में काफी समानता पायी जाती है। अतःपुरुष व महिला शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का समान होना स्वाभाविक ही है।

परिकल्पना परीक्षण – 2

उद्देश्य 2: स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना 2: "स्ववित्तपोषित माध्यमिक विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" परिकल्पना का सत्यापन क्रान्तिक अनुपात के द्वारा किया गया है, विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या–4. 8 में दिया गया है –

तालिका संख्या 2

शिक्षक / शिक्षिकांए	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	98.81	17.669	2.891	सार्थक	अस्वीकृत
शिक्षिकांए	100	106.55	80.878			

*0.05 सार्थकता स्तर पर CR का सारणी मान = 1.97

शिक्षक – शिक्षिकाओं के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान का दण्ड आरेख

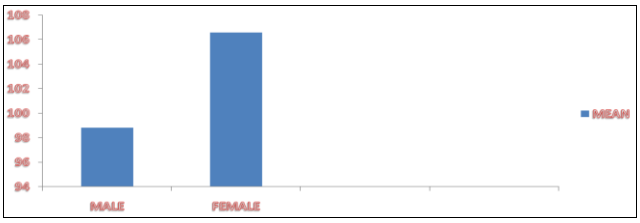

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में शिक्षक मूल्य मापनी पर प्राप्त 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 98.81 व 106.55 मानक विचलन 17.669 तथा 80.878 तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 198 स्वतन्त्रता स्तर पर 2.891 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से कम है।

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं अतः माध्यों के बीच अन्तर सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना "स्ववित्तपोषित विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है। पुरूष व महिला शिक्षकों के माध्यों से स्पष्ट है कि महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का स्तर पुरूष शिक्षकों से उच्च हैं।

परिणाम की विवेचना

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का स्तर पुरूष शिक्षकों की तुलना में उच्च है अर्थात् महिलाऐं पुरुषों की तुलना में अधिक सामाजिक हैं। सामाजिकता का गुण उन्हें अपने परिवार और परिस्थितियों से प्राप्त होता है। भारतीय परिवारों में प्रारम्भ से ही बालिकाओं को अच्छा व सौम्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जाती है। समाज उनसे सदैव अच्छे व्यवहार की आशा करता है जिससे महिलाओं पर एक अप्रत्यक्ष दबाब बना रहता है। महिलाऐं अपने मूल स्वभाव से भी धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्ति की होती हैं। इसके कारण महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का स्तर पुरूष शिक्षकों से उच्च पाया गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.

भावी अनुसंधान हेतु विभिन्न परिप्रेक्ष्य

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल कानपुर मंडल के शिक्षकों पर किया गया है भावी शोध अध्ययन अन्य मंडलों एवं राज्यों के शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लेकर किया गया है भावी शोध कार्य शिक्षा के अन्य स्तरों (प्राथमिक, उच्च प्राथमिक तथा स्नातक इत्यादि) के शिक्षकों को लेकर भी किया जा सकता है।
3. भावी शोध अध्ययन में शिक्षकों के स्थान पर छात्रों के सैद्धान्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों का भी अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Best JW, Kahn V. Research in education. New Delhi: Pearson Prentice Hall, 2006.
2. Singh AK. Research methods in psychology, sociology and education. New Delhi : Motilal Banaesidas, 2006.
3. Dinesh RS. Maanwadhikar Ka Bhartiya Parivesh. Delhi: Parmeshwari Prakashan, 2010.
4. गुप्ता, एस .पी. (2007). सांख्यिकीय विधियाँ इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.
5. पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन
6. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, अठारवां सस्करण. दिल्ली: रस्तोगी पब्लिकेशन
7. Gailea N. A Study of Gender Equality Values Bases Cross Cultural understanding in EFL Text Books. (A Content Analysis in EFL Textbooks at senior High School in Serang-Banten), 2013. Retrieved from content/uploads/2013/11/6.pdf on 19/12/2017.
8. Mukhongo A. Citizenship Education in Kenya: A Content Analysis of State Sponsored Social Studies Instructional Materials, 2010. Retrieved from https://tigerprints.clemson.edu on 25/10/2017.